लोकविद्या भाईचारा विद्यालय पुस्तकमाला-3

राजा का जूता

विद्या आश्रम, सारनाथ

जून 2021

लोकविद्या भाईचारा विद्यालय पुस्तकमाला-3

पुस्तक का नाम : राजा का जूता

प्रकाशन वर्ष : जून 2021

चित्रांकन, लेखन, संपादन : चित्रा सहस्रबुद्धे

प्रकाशन : लोकविद्या भाईचारा विद्यालय के लिए विद्या आश्रम की और से समन्वयक चित्रा सहस्रबुद्धे द्वारा प्रकाशित.

संपर्क :

पता : विद्या आश्रम
सा10/82, अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी-221007
ई-मेल : vidyaashram@gmail.com
ब्लॉग : lokavidyajanandolan.blogspot.com
वेबसाइट : vidyaashram.org
मोबाइल : 9838944822

एक समय की बात है एक राजा था.

एक दिन वह अपने दरबारी मित्रों के साथ टहलने निकला.

कुछ दूर गया तो उसके पैरों में काँटा चुभ गया. राजा झुंझलाया.
तुरंत एक सेवक ने आगे बढ़कर काँटा निकाला.

राजा और उनके साथी आगे बढ़े. बातों में मगन राजा कुछ दूर जाने पर एक उबड़-खाबड़ पगडण्डी पर ठोकर लगने से लड़खड़ा गया और कहीं से बह कर आये पानी में पैर फिसलने से गिर गया.

उसे जहाँ तहाँ कीचड़ भी लग गया और कपड़े भी मैले हो गए.

राजा बहुत गुस्सा हो गया. उसने फ़ौरन सारे दरबारियों को बुलाया और कहा कि एक बहुत विकट समस्या आ पड़ी है. आप सब लोग विद्वान हैं. मुझे आपकी सलाह की बहुत ज़रूरत है.

राजा ने हाल ही में हुई दुर्घटना के बारे में सबको बताया और कहा कि धरती पर चलते समय कोई काँटा, पत्थर या मिट्टी न लगे इसका उपाय करना है. आप लोग राय दें तो उस हिसाब से शीघ्र काम शुरू किया जा सके.

दरबारियों में कई विषयों के जानने वाले विशेषज्ञ थे. वास्तुशिल्पी, व्यापारी, सेनापति, शिक्षक, अध्ययनकर्ता, नगर-प्रबंधक आदि. सभी विद्वानों ने अलग-अलग उपाय बताये. किसी ने कहा धरती को धातु की चादर से ढँक दिया जाए. किसी ने लकड़ी के पल्लों से ढँकने की बात की, तो किसी ने मखमल की चादर से, तो किसी ने चमड़े से और किसी ने कहा कि इसके लिए तो कठिन परीक्षण, अध्ययन और प्रयोगों की आवश्यकता है. ये सब करने के लिए बहुत संसाधनों की ज़रूरत होगी, जिन्हें जुटाने के लिए हो सकता है पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण भी करना पड़े.

जल्दी ही धातु या चमड़ा, मखमल या लकड़ी के पल्ले, प्रयोगशालाएँ, उपकरण, विशेषज्ञ, आक्रमण के लिए हथियार, सेना का संगठन आदि के लिए कितना धन लगेगा इस पर चर्चा होने लगी. सारे दरबारी बड़े उत्साह से बहस में हिस्सा लेने लगे क्योंकि इस उद्यम में व्यापारी, नगर-प्रबंधक, अध्येता, कर्मचारी, आदि से लेकर दरबारियों को खुद अपनी कमाई के रास्ते बनते दिखाई देने लगे. देर रात तक वार्ता चलती रही लेकिन फिर भी योजना का कोई खाका नहीं बन पाया.

“दरबार कल फिर लगेगा” ऐसी घोषणा करके राजा अपने महल में लौट आया.

रानी अभी तक सोई नहीं थीं.

राजा ने सारी बात रानी को सुनाई.

रानी ने कहा “सुबह होने पर देखा जायेगा, क्या करना है”.

सुबह रानी ने राजा को एक सुझाव दिया.

रानी की बात मानकर दूसरे दिन राजा ने राज्य में डुगडुगी पिटवाई

कि इस समस्या को हल करने वाले को इनाम मिलेगा.

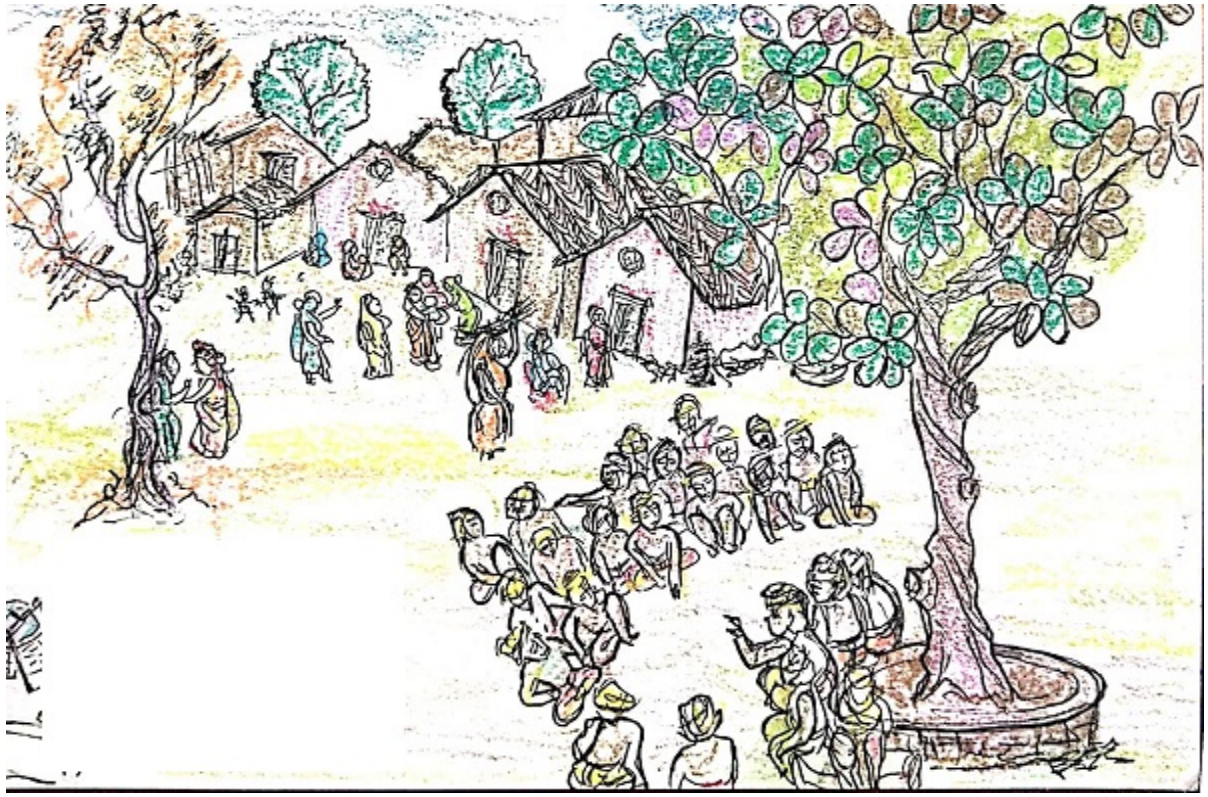

राज्य की जनता में चर्चा होने लगी. कारीगर समाजों की पंचायतों में सलाह हुई. एक सप्ताह के बाद एक छोटे से उपहार के साथ उन्होंने एक बुजुर्ग कारीगर को दरबार में भेजने का निर्णय लिया.

बुज़ुर्ग कारीगर दरबार पहुंचे.

राजा ने पूछा “क्या आपके पास समस्या का कोई हल है?”

कारीगर ने कहा “जी है, परन्तु अभी तक जितने उपाय आपके सामने आये हैं उन्हें मैं सुन लूँ, तो बताऊँ.”

दरबारियों ने एक-एक कर अपने सुझाव बतला दिये. बुज़ुर्ग कारीगर मुस्कुराकर बोले “महाराज, बुरा न मानें, कुछ बातें सफाई से कहनी होंगी.”

बुज़ुर्ग बोले “ महाराज, आपके विद्वान् दरबारियों के बतलाये सारे उपाय सही तो हैं, लेकिन न्यायपूर्ण नहीं हैं. धरती माँ को ढंक देने से वे साँस नहीं ले पायेंगी, और इसलिये ऐसा करने से हम सभी बहुत बड़े पाप के भागीदार होंगे. फिर धातु, कपड़ा, लकड़ी या चमड़े से ढंकने में धन, प्रकृति और श्रम की फिजूलखर्ची तो है ही, साथ ही बहुत बड़े पैमाने पर धरती माँ पर गहरे वार और खनन की ज़रूरत होगी. संसाधन जुटाने के लिए पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण का विचार तो बहुत ही अनैतिक है. फिर इतनी मामूली चोट लगने से फिजूलखर्ची और हिंसा के रास्ते पर चलने की सलाह देने वालों की नीयत पर संदेह होना वाजिब है और ऐसी सलाह को सुनने वाले राजा की हैसियत पर शक करना भी मुनासिब ही होगा.”

दरबार में सन्नाटा छा गया. राजा ने पूछा “आप क्या हल लाये हैं?”

बुज़ुर्ग कारीगर नम्रता से बोले ”महाराज, हमारी कारीगरों की पंचायत ने इस समस्या का हल खोजा है, उसे मैं आपके सामने रखता हूँ.” कारीगर ने उपहार में लाया एक जोड़ी जूता राजा को भेट किया. राजा ने उसे पैरों में पहना और चलकर देखा. उसका चेहरा खिल उठा. लेकिन अपनी और अपने दरबारियों की बेहूदगी के लिए वह बेहद शर्मिंदा हुआ. पूरा दरबार कारीगर के सामने झुक गया.

बुज़ुर्ग कारीगर के जाने के बाद राजा और दरबारियों को बेहद ग्लानि हुई. उन्होंने आपस में विमर्श किया और वे इस नतीजे पर पहुंचे कि यह सब कारीगर समाज की विद्या का सम्मान न करने की वजह से हुआ है. अपने लालच और ग़रूर में हमने धरती माँ को भी भुला दिया?

पश्चात्ताप की झुलस में राजा अपनी रानी और दरबारियों सहित कारीगर समाज के पास गया. उसने अपने किये के लिए क्षमा मांगी.

राजा ने कारीगर समाज को राज्य के निर्माण और व्यवस्था में निर्णायक भूमिका अदा करने के लिए आमंत्रित किया.

•

लोकविद्या भाईचारा विद्यालय के बारे में

समाज में सत्ता के अनेक केंद्र होना यह समाज के स्वस्थ और न्यायपूर्ण होने के लिए आवश्यक माना जाता रहा है. ये न केवल रचनात्मक गतियों को तेज़ करते हैं बल्कि ज्ञान और समाज संगठन के हर पक्ष को व्यापक, समृद्ध और न्यायपूर्ण बनाते हैं. ज्ञान के क्षेत्र पर किसी एक ही ज्ञानधारा की इजारेदारी, जैसी आज साइंस की है, समाज में गैर-बराबरी पैदा करती है और विविधता व सहजीवन की बुनियाद को ध्वस्त करती है. लोकविद्या भाईचारा विद्यालय सभी ज्ञान धाराओं के बीच भाईचारे के रिश्ते को बनाने और दृढ़ करने का पक्षधर है और इसी विचार से विद्या आश्रम की ओर से लोकविद्या भाईचारा विद्यालय चलाये जाते रहे हैं.

लोकविद्या भाईचारा विद्यालय की मान्यता है कि जो लोग स्कूल-कालेज नहीं जाते वे भी ज्ञानी होते हैं और समाज व देश की समृद्धि में इनके ज्ञान का बहुत बड़ा योगदान है. ये अपना ज्ञान अपने बूते पर हासिल करते हैं. उनका यह ज्ञान यानि लोकविद्या, किसी भी अर्थ में विश्वविद्यालय की विद्या से कम दर्जे का नहीं होता. लोकविद्या को जब विश्वविद्यालय की विद्या के बराबर दर्जा मिलेगा तो समाज में न्याय और बराबरी का राज स्थापित हो सकेगा. ऐसे ही समाज में किसान, कारीगर, आदिवासी, छोटी-छोटी पूँजी के बल पर सेवा और मरम्मत का काम करने वाले परिवार इज्जत के साथ समृद्ध जीवन जी सकते हैं.

इस पुस्तकमाला के अंतर्गत 'टेंगरा का पैंतरा' और 'लोकस्मृति' नाम से दो पुस्तिकाएं प्रकाशित की जा चुकी हैं और अब यह 'राजा का जूता' प्रस्तुत है. इस पुस्तकमाला की सभी पुस्तकें तथा विद्या आश्रम से प्रकाशित सभी साहित्य वेब साईट www.vidyaashram.org पर उपलब्ध है.

●